राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि—आध्यात्मिक प्रकाश स्तम्भ

दादी प्रकाशमणि जी एक ऐसी विदुषी, सशक्त नारी का नाम है जिन्होंने यह सिद्ध किया कि नारी शक्तिस्वरूपा है। नारी के अंदर विद्यमान शक्ति को आध्यात्मिकता द्वारा पुन:जागृत किया जाए तो नारी समाज में एक महान क्रांति की नायिका बन सकती है। आध्यात्मिक ज्ञान और राजयोग द्वारा नारी ही शीतला, दुर्गा, सरस्वती और संतुष्टता की मणि संतोषी देवी बन सकती है। यह स्वयं के जीवन द्वारा दादी प्रकाशमणि जी ने कर दिखाया। उन्होंने अपने नेतृत्व में भारत और विश्व के लाखों बहनों भाइयों के जीवन में अद्भुत परिवर्तन लाकर विश्व सेवा के लिए समर्पित कराया है। दादी प्रकाशमणि जी ने अपने अनुपम मूल्यनिष्ठ जीवन, आध्यात्मिक शक्ति एवं प्रशासनिक दक्षता से ब्रह्माकुमारी संगठन को प्रेम, शांति, सत्यता, समरसता, सद्भावना, आत्मिक दृष्टि, वात्सल्य, करुणा जैसे जीवन मूल्यों को परमात्म शिक्षा और विश्वास से सुसज्जित किया है। दिव्यता की मूर्ति दादी प्रकाशमणि जी का जन्म सन् 1922 में हैदराबाद सिंध में हुआ। दादी जी बचपन से ही दिव्य आभा से आलोकित थीं। सन् 1937 में विश्व के पालनहार परमपिता शिव ने दादा लेखराज को परमात्म स्वरूप का एवं भावी नई सतयुगी दुनिया का अलौकिक साक्षात्कार कराया तथा दादा लेखराज जिनका दिव्य नाम प्रजापिता ब्रह्मा है के द्वारा प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की स्थापना की। उसी क्रम में दादी प्रकाशमणि जी 14 वर्ष की तरुण आयु में इस संस्था के संस्थापक के सम्पर्क में आईं। दादी जी को भी अनेक दिव्य साक्षात्कार हुए जिसमें उन्होंने ज्योति स्वरूप शिव एवं नई सतयुगी दुनिया का साक्षात्कार किया तथा वर्तमान विश्व का, प्रकृति के प्रकोप, अणु शक्ति, गृह-युद्ध आदि द्वारा परिवर्तन होने का भी दृश्य देखा। रत्नप्रभा दादी जी ने अपनी बाल्यावस्था में ही स्व-परिवर्तन से विश्व परिवर्तन की संकल्पना के साथ इस संस्थान की आध्यात्मिक क्रांति में अपने आपको प्रजापिता ब्रह्मा बाबा के सम्मुख पूर्ण रूप से ईश्वरीय कार्य में समर्पित कर दिया। अपनी निर्मल, कुशाग्र बुद्धि और सत्यता की पहचान के कारण ब्रह्माकुमारी संगठन में प्रेरणा और उदाहरणमूर्त बनी। इनकी अलौकिक शक्ति को पहचानकर प्रजापिता ब्रह्मा बाबा ने दादी प्रकाशमणि जी तथा अन्य कुमारियों और माताओं का संगठन बनाकर, अपना सब कुछ ईश्वरीय कार्य में समर्पित किया। तब से दादी प्रकाशमणि जी इस संस्था में एक आदर्श ब्रह्माकुमारी के रूप में, संस्था की स्थापना-स्तंभ के रूप में, आध्यात्मिक ज्ञान और राजयोग को प्रस्तुत करने में एक अनुपम प्रेरणा स्रोत बनीं। संस्थान में समर्पित होने के बाद कुछ ही समय के अंदर अपने आपको एक कुशल, तेजस्विनी, तीव्रगामी पुरुषार्थी के रूप में प्रस्तुत किया और मानवीय मूल्यों से सुसज्जित प्रकाश-स्तंभ बन गई।

सन् 1954 में पिताश्री प्रजापिता ब्रह्मा बाबा ने जापान में हुए वर्ल्ड रिलिजियस कांफ्रेंस के निमंत्रण पर वक्तव्य देने हेतु आपको भेजा। इसके अतिरिक्त दादी जी ने अन्य देशों जैसे कि थाईलैंड, इंडोनेशिया,

हांगकांग, सिंगापुर, श्रीलंका आदि देशों में भ्रमण कर हजारों भाई-बहनों को ईश्वरीय संदेश देकर परमात्म कार्य में सहयोगी बनाया। दादी जी की दिव्य बुद्धि, वक्तव्य कला और योग की पराकाष्ठा को देखते हुए प्रजापिता ब्रह्मा बाबा ने उन्हें भारत के विभिन्न स्थानों पर ईश्वरीय सेवाओं हेतु भेजा। जिसके फलस्वरूप दिल्ली, अमृतसर, कानपुर, मुंबई, कोलकोता, पटना, बैंगलोर आदि महानगरों में ईश्वरीय सेवाकेंद्रों की स्थापना हुई।

सन् 1969 में संस्था के साकार संस्थापक प्रजापिता ब्रह्मा बाबा ने अपने देहावसान से पूर्व संध्या पर दादी जी की ईमानदारी, निष्ठा, अदम्य साहस, तथा विश्व कल्याण की सेवाओं में समर्पणता को देखते हुए अपना हाथ दादी जी के हाथ में देते हुए, ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय की बागडोर सौंपी। तब से वे इस अंतर्राष्ट्रीय संस्था की मुख्य प्रशासिका के रूप में कार्य करती रहीं। अध्यात्म की ज्योति लेकर दादी जी ने देश ही नहीं विदेशों में भी प्राचीन भारतीय संस्कृति, सभ्यता और राजयोग के सिद्धांतों को लेकर उच्च जीवन प्रणाली के लिए सभी को प्रेरित किया। दादी जी के कुशल संचालन में ईश्वरीय विश्व विद्यालय में व्यक्तित्व निर्माण की आभा इतनी तीव्र हुई जिसके फलस्वरूप आज देश-विदेश में हजारों ब्रह्माकुमारी आध्यात्मिक सेवा केंद्रों की स्थापना हुई और लाखों भाई-बहन ईश्वरीय कार्य में समर्पित हुए। दादी जी के नेतृत्व में समाज में शांति, सद्भावना, धार्मिक समरसता, भ्रातृत्व प्रेम जैसे मूल्यों की स्थापना के कार्य को देखते हुए प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय को संयुक्त राष्ट्र संघ ने गैर-सरकारी संस्था के तौर पर आर्थिक एवं सामाजिक परिषद की परामर्शक सदस्यता प्रदान की तथा यूनीसेफ से भी जोड़ा। दादी जी के नेतृत्व में स्ंस्थान द्वारा राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर विराट रूप से चल रहे मानवीय कार्यों को देखते हुए संयुक्त राष्ट्र संघ ने प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय को सन् 1985 में एक अंतर्राष्टीय शांति-पदक और दादी जी को सन् 1987 में सकारात्मक कार्यों के लिए शांति-दूत सम्मान से भी सम्मानित किया। 5 राष्ट्रीय स्तर के भी शांति-दूत पुरस्कार प्रदान किए। इसके अलावा दादी जी को अनेक महामंडलेश्वरों, सामाजिक संस्थाओं, राज्यों सरकारों ने अनेक पुरस्कारों तथा सम्मान चिह्नों द्वारा सम्मानित कर अभिनंदन किया। आध्यात्मिक शक्ति एवं बहिर्मुखी सेवाओं को देखते हुए दादी प्रकाशमणि जी को 30 दिसम्बर 1992 में मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय द्वारा राजस्थान के तत्कालीन राज्यपाल डॉ.एम.चेन्ना रेड्डी ने डॉक्टरेट की उपाधि से सम्मानित किया। सामाजिक सेवाओं के उत्कृष्ट कार्यों के लिए महाराष्ट्र के तत्कालीन मुख्यमंत्री शरद पवार ने 'ज्वाइंट्स अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार—1994 भेंट किया। दादी जी ने मानवता के इस महान कार्य के लिए विश्व के प्रमुख देशों का भ्रमण कर आध्यात्मिक जागृति की अलख जगाई। जिन देशों का उन्होंने भ्रमण किया उनमें हैं: संयुक्त राज्य अमेरिका, ब्रिटेन, यूनाइटिड अरब अमीरात, केन्या, जिम्बावे, जापान, अर्जेण्टीना, कनाडा, आस्ट्रेलिया, आस्ट्रिया, ब्राजील, कोलम्बिया, रूस, डेनमार्क, फ्रांस, स्वीडन, स्पेन, स्विटजरलैंड, गुयाना,

यूनान, जर्मनी, इटली, आयरलैंड, हालैंड, सिंगापुर, नेपाल, श्रीलंका आदि। इन यात्राओं में दादी प्रकाशमणि जी विभिन्न जाति, वर्ण, रंग-भेद को दूर करने हेतु विश्व के एक कोने से दूसरे कोने तक आध्यात्मिक चेतना की अग्रदूत बन गई। दादी जी की आध्यात्मिक प्रतिभा से प्रभावित भारत के विभिन्न राज्यों के राज्यपालों, मुख्यमंत्रियों और महामण्डलेश्वरों ने अपने-अपने स्थानों पर बुलाकर दादी जी के उद्बोधन से अनेक लोगों को लाभान्वित कराया तथा उनसे आशीर्वाद प्राप्त किए। उनमें से राजस्थान के तत्कालीन राज्यपाल डॉ.एम.चेन्ना रेड्डी ने, महाराष्ट्र के तत्कालीन राज्यपाल सी.सुब्रह्मण्यम्, आंध्रप्रदेश के तत्कालीन मुख्यमंत्री चन्द्रबाबू नायडू, दिल्ली के मुख्यमंत्री साहिब सिंह वर्मा, उड़ीसा के तत्कालीन मुख्यमंत्री बीजू पटनायक, जे.बी.पटनायक, पश्चिम बंगाल के राज्यपाल वीरेन शाह आदि। महाराष्ट्र, असम, उड़ीसा, कर्नाटक, गुजरात, उत्तर प्रदेश, पंजाब, हरियाणा, चंडीगढ़, छत्तीसगढ़ जैसे अनेक राज्यों में दादी जी को विशिष्ट अतिथि के रूप में सम्मानित किया गया। शिकागो में 'विश्व धर्म संसद ने शताब्दी कार्यक्रम में मनोनीत अध्यक्षा के रूप में आमंत्रित कर आशीर्वाद प्राप्त किया। सन् 2000 में जब दादी जी ईश्वरीय सेवार्थ अमेरिका गई, उस समय वाशिंगटन डी.सी में स्टेट केपिटल बिल्डिंग के सामने तत्कालीन मेयर ने दादी जी के कर कमलों से वृक्षारोपण कर 'ओम् शांति ट्री नामांकित किया तथा प्रतिवर्ष 10 जून को प्रकाशमणि दिवस के रूप में मनाने की उद्घोषणा की जो आज भी यथावत् संचालित है। आध्यात्मिक प्रकाश स्तंभ दादी जी के मिशन में जुड़ा कारवां निरन्तर बढ़ता गया। मानवीय मूल्यों से ओत-प्रोत दादी जी के निर्मल, पवित्र और प्रकाशमय जीवन से लाखों के जीवन में परिवर्तन आया। दादी जी ने अपने प्रेरक जीवन से आज 25 हजार से भी अधिक बाल-ब्रह्मचारिणी बहनों तथा करीब एक लाख से अधिक ऐसे युवाओं की फेहरिस्त तैयार की है जिसकी आज के युग में बड़ी जरुरत है। ये सभी ईश्वरीय मिशन में अपने तन-मन-धन से जुड़े हुए हैं। इनके सान्निध्य में लाखों परिवारों के लोग पवित्र, तनावमुक्त एवं संतुष्ट जीवन जीने की कला सीखकर अनेकों के लिए आदर्शमूर्त बने हैं। ऐसी आभामयी दादी जी को विश्व भर ने शत्-शत् नमन किया है।

ब्रह्माकुमारीज़